28-12-1967 सतगुरुवार ओम शान्तिः प्रातःक्लास

रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप बैठ करके रुहानी ज्ञान से बहलाते है। इसको ही बहलाना भी कहा जाता है। बच्चे जानते है कि शिव बाबा आया है स्वर्ग की स्थापना करने। शिव जयन्ति मनाते है नां। शिव जयन्ति है सबसे ऊंची इस भारत में। बाप आते ही है स्वर्ग का उदघाटन करने। यह तो बहुत ही खुशी की बात है। इसलिये ही गाते है कि गोपी-गोपियों को बहुत खुशी होती है। क्योंकि समझते है कि बाप फिर से आये है। स्वर्ग की स्थापना करने पतितो को पावन बनाने। तो उत्सव सभी फिर इसी समय के ही है जो कि फिर भक्ति मार्ग मे मनाये जाते है। शिव जयन्ति के साथ-2 ही है गीता जयन्ति। राज योग सिखाते है भविष्य मे राजाओं का राजा बनाने लिये। तो कितनी खुशी होनी चाहिये। जो लोग शिव जयन्ति मनाते है परन्तु शिव बाबा क्या करते है वो कोई भी नही जानते है। कृष्ण का नाम दे दिया है। कितने मूंझे हुये है। यही है भूलभूलैय्या का खेल। स्वर्ग की स्थापना किसने की। कुछ भी पता नही है। बाप समझाते है बच्चो को को खुशी होती है। बाते भी इसी समय की है। फिर भक्ति मार्ग मे त्यौहार आदि मनाते है। शिव जयन्ति के पीछे फिर है गीता जयन्ति। फिर रक्षा बन्धन भी मनाते है। बाप कहते है कि बच्चो मुझे पवित्र बनो। मुझे बुलाते ही हो पतितो को पावन बनाने। शिव जयन्ति तो बहुत खुशी की बात है। आत्माओं को बाप बैठ पढ़ाते है। आत्माओं से ही बाते भी करते है। क्योंकि आत्म को पवित्र बनाना है। बाप कहते है मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होगें। एकजन्म पवित्र बन कर स्वर्ग वासी बनना है। कोई मरते है तो कहते कहते है नां कि फलाना स्वर्गवासी हुआ। तो जरूर नर्क मे था नां। जैसे सन्यासी लोग गंगा को पतित पावनी समझ कर जाकर स्नान करते है। तो पतित हुये नां। अब गंगा तो पतित-पावनी है नही। स्वर्ग मे ऐसे कब नही कहेंगे कि फिलाना स्वर्ग पधारा। वहां तो पुर्नजन्म स्वर्ग मे ही लेते है नां। यहां नर्क है तो तो पुर्नजन्त भी नर्क मे ही लेते है। बाप ही समझाते है कि जब स्वर्ग का उदघाटन करने आता हूं तो ग्रन्थ मे भी है कि मनुष्य से देवता... तुम सो ही देवता थे नां। फिर 84जन्म लिये। तुम यह नही जानते थे। जिस शरीर मे प्रवेश किया है वो भी अनेन जन्मो को नही जानते थे। बाप कहते है इनके बहुत जन्मो के अन्त मे जबकि वानप्रस्थ अवस्था होती है तो इन मे प्रवेश करता हूं। फिर स्वर्ग का उदघाटन करता हूं। तो तुम बच्चो को तो कितनी नां खुशी होनी चाहिये। यहां पर तुम किस लिये आते हो। कहते है बाबा आपसे स्वर्ग का वर्सा लेने लिये आये है। बाप कहते है ऐसे नही कि तुमको कोई यहां पर ही बैठ जाना है। रहो भल अपने ही घर में। मै तो तुमको पावन बनने की युक्ति बताता हूं। पावन बनोगें तो पावन दुनियां का मालिक बनेंगे। तुम्हारी लड़ाई तो है ही माया से। वो लोग कुछ दुशहरा मनाते है। रावण को मार कर फिर उनकी लंका को लूटने जाते है। कितनी खुशी करते है। बाप समझाते है कल्प पहले भी तो जो किया है वो ही फिर भक्ति मार्ग मे मनाते है। स्वर्ग मे तो भक्ति की बात ही नही होती है। यज्ञ तप आदि कुछ भी नही होते है। बेहद के बाप से आधा कल्प के लिये वर्सा मिलता है। सिवाय बाप के और कोई दे नही सकते है। बाप कहेत है कि मै तुमको वर्सा देने आया हूं। तभी भी आश्चर्यवत भागन्ती हो जाते हैं। यह भी यज्ञ मे विघ्न पड़ते हैं ना। पवित्रता के कारण ही विघ्न पड़ते है। अबलाओं पर कितना अत्याचार होते हैं। दौपदी का दिखाते है उनको नंगन किया। उस ने पुकारा फिर कृष्ण ने साड़ी दी। अब बाप तुमको 21 जन्म लिये पवित्र बनाते है। बाकी साड़ी आदि की बात नहीं। कृष्ण का नाम लिख दिया है। यह है बाप की बात। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को 21 जन्म लिये राज-भाग देता हूं। 21 जन्म तो तुम बिलकुल सुखी रहेंगे। फिर रावण राज्य शुरू होता है। फिर तो तुम वाममार्ग मे चले जाते हो। विकारी बन पड़ते हो। इसलिए बाप फिर आते हैं तुमको निर्विकारी बनाने। अब तुम जानते हो हम जाते हैं गोल्डेन एजेड वर्ल्ड मे। भारत सोने की चिड़िया थी। ऐसा कहते हैं परन्तु कब थी, पैराडाईज़ कबथा यह कोई

28-12-67

को पता नहीं हैं। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह दिया है। तो मनुष्य घोर-अंधियारे में पड़े हुये हैं। अभी तक समझते हैं कलियुग छोटा बच्चा है। तुम जानते हो विनाश तो सामने खड़ा है। अभी बाप कहते हैं देहीअभिमानी बनो। एक को याद करो। तुम बच्चों के लिए ही शिव बाबा तिरीयर बहिस्त लाया है। स्वर्ग में चाहिए ही देवताएं। स्वर्ग की स्थापना का फाउन्डेशन बाप ही डालते हैं। तुमको पढ़ाते हैं। जो एडाप्टेड बच्चे बनते हैं उन्हों को ही पढ़ाते हैं। तुम अभी पढ़ रहे हो ना। तुम फील करते हो हम नर से नारायण बनने लिए पढ़ रहे हैं। यह सच्ची2 सत्यनारायण की कहानी तुमको शिव बाबा बताते हैं। भक्ति मार्ग में फिर अमर कथा, तीजरी की कथाएं सुनाते हैं। वह सब है झूठा। गीता भगवत, रामायण सब झूठी। सब में ग्लानी कर दी है। कहते हैं राम की सीता चुराई गई। अब वहां ऐसे अधर्म की बातें कैसे हो सकती हैं। क्या2 बैठ लिखा है। कहते हैं एक लिखते है दूसरा। रामायण तो बिलकुल ही ग्लानी का है। कृष्ण को कंस ले गये, आठवां गर्भ से पैदा हुआ। अब ऐसी बातें तो कैसे जचती हैं। सतयुग फिर कंस कहां से आया। आठवां गर्भ कहां से आया। मनुष्य तो सुन कर वाह वाह करते रहते हैं। जो सुनाओ सो कहते हं सत। अब बाप कहते यह भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग है। रूड के पानी मिशल है। डूबते ही जाते हैं। और ही दूबन में फंसते जाते। गले तक आके जब फंसते हैं तब बाप आते हैं। पुकारते हैं हे पतित पावन - तो खुद भी पतित ठहरे ना। फिर उनको महात्मा कैसे कह सकते हैं। महात्मा तो सिर्फ कृष्ण को ही कहा जाता हैं। बाकी महात्मा तो जन्म ब जन्म हठयोगी बन फिर पुर्नजन्म लेते हैं विकार से। विष और अमृत का भी एक किताब निकला हैं। अखबार में पड़ा था प्रेजीडेन्ट ने अच्छा किताब लिखने वाले को प्राईज दिया हैं। बहुत खर्चा करते हैं। तब बाप भी कहते हैं बच्चों हम तुमको इतना धन देकर गया फिर वह सब तुम ने कहां किया। भक्ति मार्ग में तुम क्या2 करते आये हो। पूजा कर फिर भोग तो खुद ही खा जाते हो। देवियों को क्या खिलाते हो। वह क्या खावेंगे। वह तो अभोक्ता हैं। खाते तो ब्राह्मण ही हैं। हप कर खा लेते हैं। सामग्री भी सारी वही ले जाते हैं। देवियों को सजाए पूजा आद कर फिर डूबो देते। न डूबते तो लात से भी डूबोते हैं। महाराष्ट्र में गणेश पर कितना खर्चा करते हैं। अब गणेश कोई है क्या। यह सब भक्तिमार्ग के ड्रामा में नुंध हैं। सेकन्ड ब सेकन्ड जो कुछ भी होता है फिर वह रिपीट जरूर करेगी। फिर भक्ति मार्ग में वह होगी। ड्रामा में एक दिन का पार्ट एक मनुष्य का पार्ट न मिले दूसरे से। जो दिन पास हुआ सो फिर 5000 वर्ष बाद वही दिन रिपीट होगा। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो हैविनली गाड फादर हेविन की स्थापना करने लिए आये हैं तो जरूर हेल का विनाश करेंगे। आजकल तो जिनके पास पैसे बहुत हैं तो समझते हैं हम तो अभी ही स्वर्ग में बैठे हैं। बाकी जो गरीब हैं वह नर्क में हैं। अरे स्वर्ग और नर्क दोनो इकट्ठे कैसे हो सकता हैं। अगर स्वर्ग यहां ही हैं तो फिर यह क्यों कहते हैं कि फलाना स्वर्ग पधारा। जरूर नर्क में थे तब तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। तुम भी नर्क में थे। अब तो आओ हम स्वर्ग में जाने का रास्ता आपको बतायें। दीपमाला भी मनाते हैं। उसमें क्या होता हैं सब का दीप जग जाता है। घर में सोझरा हो जाता है। दीपमाला अभी हो मनाते हैं। सतयुग में नहीं मनाते। अभी तुम्हारी आत्मा की दीप बुझ गया हैं बाप आकर जगाते हैं। दीपक बुझ जाने से कितनी डल बुधि बन जाते हैं। बाबा लिखते भी हैं ऐसे ही तुम तो डल बुधि हो। इतनी सहज बात भी तुम समझते नहीं हो। लौकिक बाप जो तुमको गटर में डालते हैं उनको याद करते हो और स्वर्ग में ले जाने वाले बाप को तुम याद नहीं करते हो। माया थप्पर तो बहुत लगावेंगी। इसलिए खबरदार रहना है। फिर लिखते हैं बाबा क्षमा करें। हम गिर गये। बाप कहेंगे यह क्या। मैं आया हूं तुमको पतित से पावन बनाने फिर तुम यह गंदे काम क्यों करते हो। काला मुंह कर देते हो। फिर बाबा कब उनका नाम भी नहीं लेते हैं। ऐसे गिरते बहुत हैं। हार और जीत होती है ना। जितना समर्थ बाप है, रावण भी उतना ही समर्थ है। मनुष्यों को बाप का भी पता नहीं कि किसको कहा जाता

है। माया है 5 विकार। तुम विकारों पर जीत पाते हो। मनुष्य रावण को जलाते हैं कितना खर्चा करते हैं। मैसुर का महाराजकितना मनाते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं। भगवान राम ने बन्दरों की सेना ली। कैसी2 वन्डर फुल बातबना दी हैं। बड़े मुर्ख बेसमझ बन गये हैं। बाप कहते हैं मैं ने तुमको कितनी समझ दी तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो। यह हार और जीत का खेल भारतवासियों के लिए ही हैं। बाकी तो सब है बायपलादस। भारतवासी ही बहुत गिरे हुये हैं। देवताएं थे परन्तु अब तो वह देवता धर्म है नहीं। (बड़ की झाड़ का मिशाल) बाप समझाते हैं आदी सनातन देवी देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। मैं फिर हर 5000 वर्ष के बाद आकर स्थापन करता हूं। ब्रहमा दवारा स्थापना, किसकी? आदी सनातन देवी देवता धर्म* की। दिखाते है विष्णु के नाभी से ब्रहमा निकला। परन्तु अर्थ थोड़े ही समझते है। उन्हों ने फिर गांधी का दिखाया हैं। गांधी के नाभी से नेहरु निकला। फिर कहेंगे नेहरु के नाभी से शास्त्री निकला। ऐसे 2 चित्र बनाते रहते हैं। बेसमझ दुनिया का यह हैं हाल। बाप कहते हैं यह है इरिलीजियस, अनलाफुल इनसालवेन्ट * पतित। पहले तुम क्या थे। फिर सीढ़ी उतरते आये हो। अब तुमको बाप पढ़ा रहे हैं। यह दादा भी पढ़ते हैं। जैसे तुम पढ़ते हो। इन में उसने प्रवेश किया हैं तोइनकी पढ़ाई तीखी जाती हैं। यह बाप दादा दोनो इक्टठे हैं। यह उनके बाजु में बैठा हुआ हैं। तो झट सिख जाते हैं। जो जितना पुरुषार्थ करते हैं वह उतना बनते हैं। यह पढ़ाई हैं। तुम जानते हो शिव बाबा ब्रहमा दवारा पढ़ाते हैं। शिव बाबा को ही× याद करना हैं। उनकी याद से ही तुम एवर हेल्दी बनते हो। तुम्हारी आयु अमर बन जाती हैं। तुम काल पर जीत पहनते हो। जब आयु पूरी होने का समय होता है तो तुमको सा० होता हैं अब हम जाये बच्चा बनुंगा। अभी यह शरीर छोड़ता हूं। ऐसे बैठे2 शरीर छोड़ देंगे। आयु पूरी हुई है। सा० हुआ बचपन का। मैं बुढ़ा सो जाकर बच्चा बनुंगा। बाबा को भी यह खुशी है हम बुढा हूं। फिर जाकर बच्चा श्री कृष्ण बनुंगा। फिर शादी करुंगा। तुम भी यहां आये हो नर से नारायण बनने। यह हैं ही राजयोग। साथ में प्रजा योग भी हैं। प्रजा भी तो ढेर बनेंगे ना। कल्प पहले जो स्थापन हुई थी वही होगी। जो यहां के हैं उन्हों को तीर लग जाता हैं। बाप से वर्सा लेने पुरुषार्थ करते हैं। बाप ही यह सब बातें समझा कर नर से नारायण बनने लायक बनाते हैं। इनको ही सच्चा सतसंग कहा जाता हैं। भक्ति मार्ग में तो हैं ही उतरती कला। इसलिए व ह सतसंग नही लतसंग हैं। अब बाप कहते हैं मैं ने तुमको सतोप्रधा न बनाया फिर तुम गिरे कैसे। जरूर इन गुरुओं सन्यासियों आद ने ही तुमको गिराया है। वह तो गिराने वाले हैं ही। सीढ़ी उतरते ही आते हैं। चढ़ती कला तो तुम्हारी सिर्फ अब ही होती हैं। आधा कल्प भक्ति करते, वेद-शास्त्र आद पढ़ते तुम × उतरते ही आये हो। फिर जब अन्त होती हैं तो बाप आकर पढ़ाते हैं। कल्प पहले वाले ही आकर पढ़ते हैं। जो ब्राहमण बनते हैं वही फिर देवता बनेंगे। शुद्र कब देवता बन न सके। नारद का भी मिशाल हैं ना। उसने कहा हम लक्ष्मी को वर सकते हैं। तो बोला तुम अपनी सिकल तो देखो। यहां भी तुमको बन्दर से मंदिर लायक बनाया जाता हैं। यह वेश्यालय हैं। अब उनको शिवालय जाते हैं। बाप कहते हैं दिन प्रति दिन तुमको नई बातें समझाता रहता हूं। उत्सव भी सब पास्ट की हैं। भक्ति मार्ग में मनाते आते हैं। कितना खर्चा करते हैं। अभी तुम अपने लिए अपना राज्य स्थापन कर रहे हो* योगबल से। बाप तो कहते हैं घर-गृहस्थ में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। स्वदर्शन चक्र भी तुम्हारे लिए है। तुमको यानी आत्मा को सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान मिला? तीसरा नेत्र तुमको मिला हैं। तुम त्रिनेत्री- त्रिकालदर्शी हो। आदि, मध्य, अन्त को × तुम जान गये हो। और कोई नहीं जानते हैं। यह चक्र कैसे फिरता है और कोई नहीं जानते। अब तुम कहेंगे हम बाप के जीवनकहानी को भी जानते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त को भी जानते हैं। बाकी धारणा तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही होती है। कितना बड़ा स्कूल हैं। इनको कहा जाता है गाड फादरली युनिवर्सिटी। बाप आकर नर से नारायण बनाते हैं। यह नालेज सोर्स ऑफ इनकम हैं। बेहद का बापनालेज देते हैं। जिससे तुम कितना ऊंच बनते हो। एमआबजेक्ट हैं सहज राजयोग। बाप को याद

28-12-67

करने से तुम एवर हेल्दी बनेंगे। नई दुनिया में तो तुम्हारी आयु भी कितनी बड़ी थी। तुम एवर हेल्दी थे। फिर सीढ़ी उतरते पावन से पतित बनते आये हो। अब फिर बाप कहते हैं पावन बनो। ज्ञानपूरा होगा फिर लड़ाई शुरू होगी। तुम जितना याद की यात्रा में दौड़ी पहनेंगे उतना तुम्हारा ही कल्याण होगा। यह ईश्वरीय रेस। जो बहुत याद में रहेंगे वह बहुत आगे जावेंगे। यह ह्युमन अश्व दौड़ है। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तुम्हारे ऊपर अभी बृहस्पत की दशा है। बृक्षपति तो बाप है ना। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप बृक्षपति। इनको बृहस्पत कहा जाता है। तुम्हारे पर भी दशायें फिरती रहती हैं। राहु की दशा बैठने से विकार में गिर पड़ते हैं। यह तो बहुत भारी कमाई है। कोई भरत् हाथ जाते हैं, जो अच्छी रीत पढ़ेंगे तो कहेंगे बृहस्पत की दशा है। राहू की दशा गिरा देती है। बाप सभी बातें समझाते रहते हैं। पूछने की भी दरकार नहीं रहती। क्या पूछेंगे कुछ भी जानते नहीं। इसलिए बाबा ने समझाया था जो रचता और रचना के आदि मध्य अंत को नहीं जानते वह ईडीयट है। कितने बड़े2 म्युज़ियम आद बनते रहते हैं। खर्चा तो होता है ना। हिम्मते मर्दा मददे बेहद का बाप। गायन भी है सावनशाह का हुण्डी सकारेंगे। यह सांवरा है ना। वह तो एवर गोरा है। मुसाफिर अथवा माशुक भी देखो कैसा है। आकर सभी को गोरा बना देते हैं। देवताओं को देखो नेचरल खुबसुरती कैसी है। नेचरल ब्युटी रहती है। 5 तत्व भी प्युर बन जाते हैं। अभी तो तत्व भी तमोप्रधान हैं। कितने उपद्रव होते रहते हैं। सतयुग में दुःख की बात नहीं होगी। रोने की बात ही नहीं। बाप भी कहते हैं तुमको रोने का न है। जो रोयेंगे सो खोवेंगे। इसमें तो नष्टोमोहा होना है। तुम हर 5000 वर्ष बाद बाप से वर्सा लेते आये हो। यह राजाई स्थापन हो रही है। इन में तो नम्बरवार पद, प्रजा आद सब होंगी। प्रजा बनते बनते फिर कोई वारिस भी बन जाते हैं। प्रजा बनने के लिए यह प्रदर्शनी है। जिन्हों ने बहुत भक्ति की होगी वह तुमको चटक पड़ेंगे। तुम्हारे घराणे के जो होंगे वही आवेंगे। कोई आकर चले जाते हैं। फिर आते हैं। जावेंगे कहां। हटी तो एक ही है। तुम खर्चा कर अखबारों में भी डाल सकते हो। आगे चल कर जब तुम्हारा प्रभाव निकलेगा तो फिर आपे ही अखबारों में डालते रहेंगे। अभी तुम्हारी है चढ़ती कला। सुखधाम में भी जो समय पास होता है थोड़ा2 करते तुम सीढ़ी नीचे उतरते ही आते हो। फिर अन्त में बाप आकर चढ़ती कला करते हैं। सर्व का सदगति दाता एक बाप ही है। कहते हैं वर्ल्ड में पीस हो। अब पीस तो होती है निराकारी दुनिया में। यहां तो पार्ट बजाना है। सतयुग नई दुनिया में एक धर्म राज्य था। तो पीस, प्युरीटी प्रास्पर्टी भी था। एक भाषा थी। लड़ाई आद की कोई बात नहीं। योगबल से तुम ऐसा राज्य लेते हो। तुम कोई को भी कह सकते हो शिव बाबा निराकार है, वह कहते हैं मामेकं याद करो। देह सहत देह के सब धर्म को छोड़ो। तुम बच्चे बृक्षपति की दशा लेकर आये हो पढ़ने। जितना पढ़ेंगे उतना नम्बरवार पुरुषार्थ पास होंगे। बच्चे अच्छा पढ़ते हैं तो बाप भी खुश होते हैं। सपूत और कपूत बच्चे तो होते हैं ना। इस समय बाप तुमको देही अभिमानी बनाते हैं। आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन बनना है। शिव बाबा को कहते हैं नाम रूप से न्यारा है। तुमको भी नाम रूप से न्यारा बनना है। शरीर का भान छोड़ नंग जाना है। तुम ही पतित बने हो। तुमको ही पावन बनना है। अच्छा मीठे2 सिकी-लधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा याद प्यार गुडनाईट। नमस्ते।

डायरेक्शनः- सर्व सेन्टर्स प्रति रूहानी बाप दादा का फरमान है कि देहली म्युज़ियम को देखने लिए जो
****
भी जावे वह अपने ही प्रबन्ध से जाये देख आये सकते हैं। म्युज़ियम के हेड ब्राहमणी के पूछे बिगर कोई रात को रह नहीं सकते हैं। अच्छा अब विदाई।

हलो हम मधुबन निवासियों को बहुत2 याद प्यार स्वीकार करना जी। अच्छा अब विदाई।

माउन्ट आबू।